एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कृषक महिलाओं की कृषि आदानों तक पहुंच में सुधार के लिए शोध योग्य मुद्दे

(*विकास कुमार मीणा)
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (313 001)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: vmmeena543@gmail.com

खाद्य उत्पादन क्षेत्र में सतत विकास करने के लिए कृषि में महिलाओं की गुणवत्तापूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करना जरुरी है । बदलते सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य में गैर–कृषि नौकरियों के लिए पुरुषों के प्रवास के कारण ग्रामीण कृषि में अभूतपूर्व परिवर्तन देखे गए।
वाणिज्यिक कृषि में उच्च निवेश, जलवायु परिवर्तन और बाजार की अनिश्चितता से जुड़े जोखिमों ने अधिक पुरुष सदस्यों को कृषि से विस्थापित होने के लिए मजबूर किया। इससे ग्रामीण महिलाओं को वास्तविक कृषक के रूप में उभरने में मदद मिली। महिलाओं की वर्तमान भूमिका को देखते हुए कृषिरत महिलाओं के हित में बाजार और ऋण नीतियों में भी सुधार किया जा रहा है।

वर्तमान में, हालांकि ग्रामीण कृषि ज्यादातर महिलाओं पर निर्भर है, पर विभिन्न लिंगगत मुद्दों पर शोधकर्ता, विस्तार और तृणमूल स्तर की कार्यकर्ताओं की समझ अभी भी प्रारंभिक अवस्था में है। इसलिए, कृषि में महिलाओं को बढ़ावा देने के लिए और इसी में जुड़े हुए सारे हितधारकों के जानकारी की जरूरतों को पूरा करने के लिए निष्पक्ष रूप से लिंग संबंधी मुद्दों को विस्तृत करने की आवश्यकता है, ताकि कृषि में महिलाओं को सशक्त बनाने की उनके प्रयासों को में उचित रूप से दिशा निर्देशित किया जा सके। बीज, खाद, उर्वरक और सूचना जैसे कृषि–आदानों तक पहुंच टिकाऊ कृषि के लिए महत्वपूर्ण है। पुरुष किसानों और कृषिरत महिलाओं को अपनी खेती की आवश्यकता के अनुसार कृषि के लिए विभिन्न प्रकार के कृषि–इनपुट की आवश्यकता होती है। हालाँकि, इन कृषि–आदानों पर उनकी पहुंच और नियंत्रण अलग–अलग हैं और शिक्षा, सामाजिक गतिशीलता, जागरूकता और निर्णय लेने में भागीदारी जैसे सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक और क्षमता कारकों द्वारा निर्देशित होते हैं।

इसलिए कृषि में महिलाओं को सशक्त बनाने के विषय को उनके जटिल सामाजिक ढांचे के हिस्से के रूप में अध्ययन किए बिना और उनके घर, खेत, समाज और पर्यावरण के संबंध में लिंगीय संबंध का विश्लेषण किए बिना अलग से नहीं निपटाया जा सकता है। इससे कई शोध योग्य मुद्दे उत्पन्न होते हैं जो लिंग और कृषि विकास से निपटने के लिए शोध के लिए अधिक अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं।

महत्वपूर्ण कृषि–आदानों और उन तक ग्रामीण महिलाओं की पहुंच:

1. गुणवत्तापूर्ण बीज तक महिलाओं की पहुंच से संबंधित मुद्दे:

बीज , खेती के लिए सबसे महत्वपूर्ण आदान है और सबसे आसानी से उपलब्ध है। हालाँकि सही समय पर उचित गुणवत्ता वाली वांछनीय किस्म के बीजों की अनुपलब्धता कृषक समुदाय के लिए चिंता का विषय है। गुणवत्तापूर्ण बीज तक पहुंच वास्तव में पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए एक सीमित कारक है, जो बाढ़, सूखा चक्रवात आदि जैसी प्राकृतिक आपदाओं के कारण क्षतिग्रस्त हुई कृषि के पुनर्वास के मामले में और भी गंभीर हो जाती है।

बीज सुरक्षा, कृषक परिवार की खाद्य सुरक्षा की दिशा में पहला कदम है। हालाँकि बीज संबंधी समस्याओं का अनुभव पुरुषों और महिलाओं द्वारा अलग–अलग तरीके से किया जाता है। ये मुद्दे कृषक महिलाओं की बीज जैसे आदान तक पहुंच निर्धारित करते हैं।

शोध योग्य मुद्दे

- बीज उत्पादन एवं प्रबंधन में लैंगिक मुद्दों की पहचान।
- बीज गुणन और स्थानीय कृषक प्रजातियों के वितरण में कृषिरत महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना।
- खेत में बचाए गए बीज की गुणवत्ता में सुधार के लिए महिलाओं को शामिल करते हुए बीज उत्पादन मॉडल का विकास।
- बीज उत्पादन और प्रबंधन में महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी खतरों को कम करना।
- बीज उत्पादक संगठनों के बारे में जानकारीकृषक महिलाओं तक पहुंचाना।
- राज्य बीज प्रमाणीकरण प्रणाली से महिलाओं को जोड़ना।
- कृषक महिलाओं की जागरूकता में सुधार के लिए बीज की गुणवत्ता और बीज कानूनों पर तथ्यों का सरलीकरण करना ।
- बीज निष्कर्षण, पैकिंग और भंडारण पर महिलाओं की तकनीकी आवश्यकता को समझना और उनके क्षमता निर्माण करना ।
- कृषक महिलाओं की स्थिति के लिए उपयुक्त बीजों के भंडारण और मूल्य संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकी का मानकीकरण।
- महिलाओं की बीज आवश्यकता और बीज स्थिति पर लिंग आधारित अलग–अलग डेटा तैयार करना

2. महिलाओं की खाद तक पहुंच के मुद्दे

खाद खेती का सबसे महत्वपूर्ण घटक है और मिट्टी के स्वास्थ्य और मानव स्वास्थ्य दोनों में इसकी बड़ी भूमिका है। दशकों पहले महिलाएं खाद की एकमात्र संरक्षक थीं। लेकिन बदलते समय में हर घर में पशुधन की संख्या कम हो गई, कुछ को छोड़कर जहां इसे व्यावसायिक पैमाने पर लिया जाता है। पशुपालन से संबंधित महिलाओं की डेयरी गायों, भैंसों, मुर्गी, बकरियों और भेड़ों अदि के सफाई करने, खिलाने, दूध निकालने और देखभाल करने अदि काम में उन की कौशल और रुचि में कमी इसका मुख्य कारण हो सकती है। मशीनीकरण बढ़ने से बैलों का पालन–पोषण लगभग समाप्त हो गया। चरागाह भूमि की कमी के कारण बकरी और भेड़ पालन में सामाजिक समस्याएं बढ़ गईं। सामाजिक– सांस्कृतिक प्रतिबंधों ने उच्च वर्ग के लोगों को मुर्गी पालन से रोका। इनका खेती पर गंभीर प्रभाव पड़ा और खाद की उपलब्धता कम हो गई और रासायनिक उर्वरकों के उपयोग में वृद्धि हुई जिससे मिट्टी की भौतिक गुणबत्ता में गिरावट आई। खाद की कमी के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए खाद और कंपोस्टिंग प्रौद्योगिकी में बहुत विकास हुआ है।

उच्च गुणवत्ता वाली गोबर की खाद तैयार करने के लिए बहुत सारे खेत और घरेलू अपशिष्ट पदार्थ दुर्लभ पशु मल की कमी की पूर्ति कर सकते हैं। हालाँकि, कृषि क्षेत्र से बड़े पैमाने पर पुरुषों के प्रवासन और घरेलू खाद्य सुरक्षा को बनाए रखने के लिए कृषि आय पर बढ़ते बोझ के संदर्भ में इन नई प्रौद्योगिकियों का उपयोग अधिक जरूरी लगता है। इसलिए केवल कृषि आय पर निर्भर न रहकर, महिलाएं अधिक आय सृजन के लिए पशुधन पर निर्भर हो सकती हैं, जिससे कृषि प्रणाली के विभिन्न घटकों की परस्पर निर्भरता के कमी को संबोधित किया जा सकता है। इसलिए खाद एक महत्वपूर्ण कृषि–इनपुट होने के कारण कृषि में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए अधिक शोध योग्य मुद्दे उत्पन्न कर सकता है।

शोध योग्य मुद्दे

- खाद तक पहुंच में लैंगिक मुद्दों की पहचान।
- खाद और कंपोस्टिंग पर सूचना और प्रौद्योगिकी के लिए महिलाओं की आवश्यकता पर लिंग आधारित डेटा तैयार करना।
- गोबर की खाद की तैयारी में कृषक महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना।
- उनके संसाधन आधार और आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए खाद तैयारी मॉडल का विकास।
- गोबर की खाद तैयार करने और प्रबंधित करने में महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी खतरों को कम करना।

- खाद और कंपोस्टिंग के संबंध में सूचना और प्रौद्योगिकी तक कृषक महिलाओं की पहुंच में सुधार करना।
- महिलाओं को मार्केटिंग से जोड़ना।
- कृषक महिलाओं की जागरूकता में सुधार के लिए खाद की गुणवत्ता और मानकों पर तथ्यों का सरलीकरण।
- कृषक महिलाओं की स्थिति के लिए उपयुक्त थ्ल्ड के भंडारण, पैकिंग और मूल्यवर्धन के लिए प्रौद्योगिकी का मानकीकरण।
- गोबर की खाद उत्पादन में उद्यमिता विकास के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का प्रभाव विश्लेषण।

3. कृषि उर्वरक और पौध संरक्षण रसायनों तक महिलाओं की पहुंच से संबंधित मुद्दे

कृषि अब एक तरफ उर्वरकों और पौध संरक्षण रसायनों के उपयोग को कम करने और दूसरी तरफ उत्पादन बढ़ाने के मिशन के साथ एक चौराहे पर खड़ी है। जब कृषक महिलाओं की बात आती है तो यह स्थिति और भी गंभीर हो जाती है। कृषक महिलाएं कृषि रसायनों के उपयोग और उन तक पहुंच से उत्पन्न होने वाले स्वास्थ्य खतरों से पीड़ित हैं।

पर्याप्त सुरक्षा उपायों के साथ कृषि रसायनों का उचित उपयोग हम सभी के सामने अभी भी हासिल करने का लक्ष्य है। इनकी उच्च लागत के साथ–साथ अत्यधिक उपयोग से कई समस्याएं पैदा होती हैं जैसे लाभ में कमी, प्रतिरोध का पुनरुत्थान, खराब मिट्टी के स्वास्थ्य के कारण उत्पादन में कमी, भूजल प्रदूषण आदि, जिस पर सभी क्षेत्रों को ध्यान देने की आवश्यकता है।

इसलिए आधुनिक कृषि पद्धतियों में हस्तक्षेप करने और कृषि में अधिक महिलाओं को शामिल करने से अधिक शोध मुद्दे उत्पन्न हो सकते हैं, जिन्हें लिंग परिप्रेक्ष्य के साथ संबोधित करने की आवश्यकता है।

शोध योग्य मुद्दे

- पौध संरक्षण और मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में लैंगिक मुद्दों की पहचान।
- कृषि रसायनों को संभालने के लिए कौशल में सुधार।
- लिंग परिप्रेक्ष्य के साथ आईपीएम मॉडल का मूल्यांकन।
- कृषि रसायनों के कारण महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी खतरों को कम करना।
- कृषि रसायनों के उचित उपयोग के बारे में जानकारी तक कृषक महिलाओं की पहुंच में सुधार के लिए रणनीतियाँ
- सुरक्षित जैविक या पौध आधारित पौध संरक्षण उपायों की तैयारी पर महिलाओं की तकनीकी आवश्यकता।
- कृषि रसायनों के लिए कृषक महिलाओं की पहुंच, कौशल और तैयारियों पर लिंग आधारित डेटा तैयार करना
- कृषि रसायनों के लिए कृषक महिलाओं की पहुंच, कौशल और तैयारियों पर लिंग आधारित डेटा तैयार करना

4. प्रौद्योगिकी तक महिलाओं की पहुंच के मुद्दे

ऐसा माना जाता है कि प्रौद्योगिकियाँ सभी प्रकार की कृषि समस्याओं का समाधान प्रदान करती हैं और प्रौद्योगिकियाँ किसानों की स्थानीय परिस्थितियों के लिए उपयुक्त होनी चाहिए। हालाँकि कुछ कृषि तकनीकों का विकास किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखकर नहीं किया जाता है, परिणाम स्वरूप इसका पूरा लाभ नहीं मिल पाता है।

कृषि में महिलाओं को ध्यान में रखते हुए, एर्गोनॉमिक्स, खेती के पैटर्न, इनपुट उपयोग, सूचना की आवश्यकता, सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था, कौशल और ज्ञान जैसी उनकी आवश्यकताएं पुरुषों से पूरी तरह से अलग हैं। तो जरूरी नहीं कि पुरुषों के लिए अच्छी तकनीक महिलाओं के लिए भी अच्छी हो।

इसलिए किसी प्रौद्योगिकी की अवधारणा, विकास और परीक्षण की प्रक्रिया में, कृषक महिलाओं की भागीदारी सबसे आवश्यक है और इससे उत्पन्न होने वाले शोध योग्य लैंगिक मुद्दों को संबोधित करने की आवश्यकता है।

शोध योग्य मुद्दे

- कृषि में तकनीकी आवश्यकता में लैंगिक मुद्दों की पहचान।

- प्रौद्योगिकी अपनाने में महिलाओं की बाधाओं का अध्ययन करना।
- महिलाओं के साथ प्रौद्योगिकी का सहभागी मानकीकरण।
- प्रौद्योगिकी अपनाने की प्रक्रिया में महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी खतरों को कम करना।
- प्रौद्योगिकी विकास संगठनों के संबंध में जानकारी तक कृषक महिलाओं की पहुंच में सुधार के लिए रणनीतियाँ।
- कृषक महिलाओं की स्थिति के लिए उपयुक्त बीजों के भंडारण और मूल्यसंवर्धन के लिए प्रौद्योगिकी का मानकीकरण।
- महिलाओं की तकनीकी आवश्यकता और बाधाओं पर लिंग आधारित डेटा का सृजन।

5. कृषि उपकरणों तक महिलाओं की पहुंच से संबंधित मुद्दे

आजकल खेती की लागत कई गुना बढ़ गई है, जिससे खेती लाभकारी नहीं रह गई है। श्रम, कृषि रसायन, बीज, उर्वरक की उच्च लागत ने उत्पादन की लागत में योगदान दिया। इन सबके बीच, श्रम लागत सबसे अधिक है। इसलिए खेती में मानव दिवस कम करने के लिए हर संभव स्तर पर मशीनीकरण की आवश्यकता है। इससे समय पर संचालन में भी सुविधा होगी, अन्यथा समय पर श्रमिक उपलब्ध न होने के कारण विलंब होगा ।

सभी प्रकार की भूमि, फसल प्रणालियों के लिए विभिन्न संगठनों द्वारा मैनुअल और बिजली संचालित उपकरण और मशीनरी दोनों विकसित किए गए है । हालाँकि विकसित किए गए अधिकांश उपकरणों और मशीनरी का परीक्षण और मानकीकरण विभिन्न स्तर की कृषक महिलाओं के लिए नहीं किया गया है। इसलिए कृषि के मशीनीकरण के बारे में सोचते समय, जहां कृषक महिलाएं प्रमुख हितधारक हैं, कुछ लिंग संबंधी मुद्दों पर ध्यान देकर अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए–

शोध योग्य मुद्दे

- यंत्रीकृत खेती में कृषक महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना।
- यंत्रीकृत खेती में महिलाओं के खतरों को कम करना।
- कृषि उपकरणों और मशीनरी तक कृषक महिलाओं की पहुंच में सुधार।
- यंत्रीकृत खेती मेंमें सुधार के लिए महिलाओं को शामिल करते हुए कृषि उपकरणों और मशीनरी का विकास।
- कृषि उपकरणों और मशीनरी के संबंध में जानकारी तक कृषक महिलाओं की पहुंच में सुधार करना।
- महिलाओं को कृषि उद्योगों से जोड़ना।
- कृषि उपकरणों और मशीनरी पर महिलाओं की तकनीकी आवश्यकता।
- कृषक महिलाओं की स्थिति के लिए उपयुक्त कृषि उपकरणों और मशीनरी का मानकीकरण।
- कृषि उपकरणों और मशीनरी पर लिंग पृथक्कृत डेटा तैयार करना

निष्कर्ष

कृषि–इनपुट के संबंध में पहचाने गए शोध योग्य मुद्दे लिंग संवेदनशील कार्यक्रमों को डिजाइन करने में उपयोगी होंगे जो महिलाओं और पुरुषों की बाधाओं को उचित रूप से संबोधित कर सकते हैं, जिससे प्रदर्शन और परिणामों में सुधार हो सकता है। इससे शोधकर्ता को भेद्यता में लिंग अंतर की समझ में सुधार होगा, जिसके परिणामस्वरूप समय पर योजना बनाई जा सकेगी और महिलाओं पर अंतर प्रभाव कम हो पाएगी ।

इसी तरह हम उन गतिविधियों की पहचान कर के महिलाओं के आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, कौशल और आत्म–संगठन को बेहतर बनाने के अवसर प्रदान करके उनके सशक्तिकरण में योगदान कर सकते हैं।